X

Wittgenstein's — Language Game

भाषायी खेल का सिद्धांत उत्तरकालीन विट्गेन्स्टीन द्वारा 'फिलोसोफिकल इन्वेस्टीगेशन' में प्रस्तुत किया गया है जो उनके उपयोग सिद्धांत का ही अंश है। विट्गेन्स्टीन का मत है कि दार्शनिक समस्याएं कोई वास्तविक समस्याएं नहीं है बल्कि साधारण भाषा के गलत उपयोग से उत्पन्न होती हैं। ये समस्याएं 'बोतल में फँसी मक्खी की भनभनाहट' के समान है। इनके उपचार का एक ही तरीका है कि दार्शनिक को यह समझा दिया जाए कि वह भाषा के गलत प्रयोग के कारण अनावश्यक रूप से कृत्रिम समस्या पर विचार कर रहा है। रूपक की भाषा में वे कहते हैं कि दार्शनिक समस्या के निदान का अर्थ है — 'मक्खी को बोतल से बाहर निकलने का रास्ता दिखा देना' (to show the fly the way out of the bottle)। इस रास्ते को ही उन्होंने भाषायी खेल कहा है। भाषायी खेल वह उपचार क्रिया (therapy) है जिसके माध्यम से दार्शनिक समस्याओं को सुलझाया जाता है। इसी अर्थ में विट्गेन्स्टीन ने दर्शन के कार्य की व्याख्या उपचार विधि के रूप में की है।

विट्गेंस्टीन ने भाषायी खेल की परिभाषा नहीं दी है क्योंकि उनके अनुसार परिभाषा देने का प्रयास इसे न समझने का प्रमाण है। वह खेल शब्द का प्रयोग साधारण भाषा के अंतर्गत करता

है। जब हम साधारण भाषा में खेल के संबंध में कुछ कहना चाहते हैं तो कुछ खेलों का उदाहरण देते हैं और कहते हैं कि 'यह सब तथा ऐसे ही कुछ और'। यदि हम खेल की निश्चित परिभाषा देना चाहें तो हमें विश्व के सभी खेलों में सामान्य की खोज करनी होगी जो न सिर्फ असंभव है बल्कि दार्शनिक समस्याओं में उलझने का कारण भी है। यदि हम खेल की परिभाषा के लिए 'प्रतिस्पर्धा' के तत्व को महत्व दें तो मैत्री-खेल तथा चैरिटी से संबंधित खेल की धारणा निरर्थक हो जाती है। यदि शारीरिक क्रिया पर बल दें तो शतरंज जैसे खेल बाहर हो जाते हैं. यदि दक्षता (skill) या 'अनुमान' पर बल दें तो ताश जैसे खेल बाहर हो जाते हैं जिनमें सबसे बड़ी भूमिका संयोग की होती है। अतः स्पष्ट है कि खेल की अवधारणा निश्चित नहीं हो सकती। अधिक से अधिक हम यही कह सकते हैं कि खेलों का एक परिवार है जिसमें सभी सदस्यों में सामान्यतः पारिवारिक सादृश्य (Family Resemblence) पाया जाता है। विटगेन्स्टीन के अनुसार जो बात खेल की धारणा पर लागू होती है, वही साधारण भाषा पर भी लागू होती है तथा भाषायी खेल खेलने से पहले इसे समझ लेना बेहद आवश्यक है।

विटगेंस्टीन के अनुसार भाषायी खेल खेलने के लिए हमें उक्तियों को उनके तात्विक प्रयोग से हटाकर दैनिक जीवन के प्रयोगों पर लौटाना दि~~खाना~~ है। देखना है। वे कहते हैं कि

ऐसा नहीं है कि दार्शनिक समस्या में उलझे दार्शनिक को शब्दों या उक्तियों के साधारण उपयोग की जानकारी नहीं है। उनके अनुसार दार्शनिकों की समस्या मात्र इतनी है कि उन्होंने साधारण भाषा को छुट्टी पर भेज दिया है। उन्हें सिर्फ याद दिला देना है कि इन उक्तियों का प्रयोग साधारण भाषा में किस प्रकार होता है। उदाहरण के लिए, जब कोई दार्शनिक ज्ञान, सत्, शून्य और आत्मा जैसे शब्दों का प्रयोग करता है और इनकी अवधारणा स्पष्ट करने का प्रयास करता है तो उससे सिर्फ यही पूछना है कि क्या इन शब्दों तथा उक्तियों का प्रयोग वह साधारण भाषा में ऐसा ही करता है?

विट्गेंस्टीन के अनुसार भाषायी खेल औपचारिक नहीं, अनौपचारिक क्रिया है। इसका तात्पर्य यह है कि इसकी कोई ऐसी निश्चित विधि नहीं है जो हर तरह के भाषायी खेल पर लागू हो जाती हो। वस्तुतः ऐसी विधि की खोज करना तो स्वयं दार्शनिक समस्या से ग्रस्त होने का प्रमाण है। आरंभिक विटगेंस्टीन स्वयं इस समस्या से ग्रस्त रहा है, इसलिए अर्थ के चित्र सिद्धांत में वह सार्वभौमता तथा निश्चयात्मकता की खोज करता है जो अब उसे निरर्थक प्रतीत होती है। स्पष्ट है कि भाषायी खेल में तदर्थता (Adhocism) विद्यमान है अर्थात जब कोई समस्या सामने आएगी, तभी उसकी माँगों के अनुरूप भाषायी खेल की विधि

निर्धारित होगी।

विट्गेंस्टीन के अनुसार भाषायी खेल के अनेक प्रकार हो सकते हैं क्योंकि भाषा के विभिन्न रूप जीवन के ही विभिन्न रूप हैं। इसका सबसे पहला उदाहरण 'आदिम भाषायी खेल' (Primitive Language Game) में दिखता है जिसके अंतर्गत कोई बच्चा अपनी भाषा सीखना शुरू करता है। संदर्भ के अनुसार इसके रूप बदलते जाते हैं।

विटगेंस्टीन ने दर्शन की बहुत सी समस्याओं का निराकरण भाषायी खेल के माध्यम से किया है। ऐसी समस्याओं में प्रमुख हैं — मन (Mind) संबंधी विचार, संवेदन (Sensation) की समस्या, निजी भाषा (Private Language) की धारणा, अन्य मन (Other Minds) की समस्या तथा तार्किक अनिवार्यता व निश्चयात्मकता की समस्या।

जो दार्शनिक आकारिक भाषा के समर्थक हैं, वे इस विचार को अस्वीकार करते हैं। उनका दावा है कि साधारण भाषा में शब्दों के प्रयोग में अनेकरूपता तथा अनेकार्थकता पाई जाती है और यदि हम इसका प्रयोग दर्शन के स्तर पर करना चाहें तो समस्त दार्शनिक धारणाएँ निरर्थक हो जाती हैं। उनके अनुसार विटगेंस्टीन ने स्वयं इस सिद्धांत में कोई निश्चित धारणा प्रस्तुत नहीं की है जिसके आधार पर इस

दर्शन में प्रयोग किया जा सके। यह विचार मुख्यतः रसेल और तार्किक भाववादियों का है जिन्होंने आकारिक भाषा को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।

परंतु इसके बावजूद भाषायी विश्लेषण की धारणा का महत्व कम नहीं है। इसने पहली बार दर्शन और जीवन की भाषा को एक ही स्तर पर लाने का बड़ा प्रयास किया जो सीमित रूप में मूर के 'सहज बुद्धि समर्थन' में दिखता था। विट्गेन्स्टीन के इसी विचार पर आगे चलकर साधारण भाषा दर्शन (Ordinary Language Philosophy) का विकास हुआ और स्ट्रॉसन जैसे दार्शनिकों ने स्वप्नदर्शी तत्वमीमांसा (Speculative Metaphysics) के स्थान पर वर्णनात्मक तत्वमीमांसा (Descriptive Metaphysics) की स्थापना की।